अकार

62

प्रियंवद की प्रतिनिधि कहानियों का संकलन

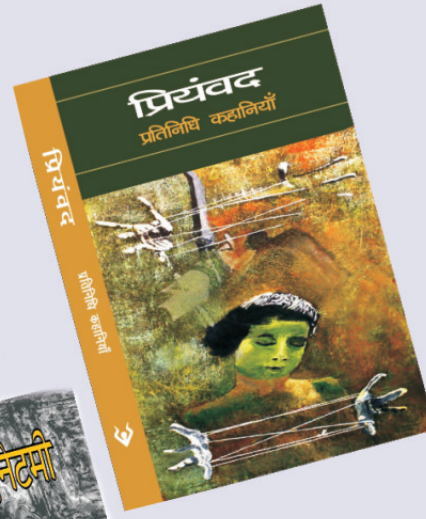

प्रियंवद की कहानियाँ

आधार प्रकाशन प्रा. लि.
एस.सी.एफ. 267 सेक्टर-16
पंचकूला-134113 (हरियाणा)
www.aadharprakashan.com

आप ये पुस्तकें
अकार से भी प्राप्त कर सकते हैं:-
संपर्क करें (वाट्स एप)
मनीषः 9935058400

अकार

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष–22 अंक 62
जनवरी 2023

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

एक प्रति - 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता - 150/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता - 200/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत) - 400/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत) - 600/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत) - 1500/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता - 2000/- रु.
पत्रिका रजिस्टर्ड डाक अथवा कूरियर से मंगाने के लिये वार्षिक सदस्य कृपया 100/- रुपये (तीन अंक) और जोड़ लें ।

प्रकाशक
अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - akarprakashan@gmail.com
सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574
आवरण :- जीवेश प्रभाकर
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001
सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं । 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं । आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएगें ।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. **अकथ :** काल के कपाल पर लिखा सच- *प्रियंवद* 04

2. **प्रसंग-अप्रसंग :** स्वैच्छिक दासता- एतिने द ला बोइसी-*अनुः नंद किशोर आचार्य*.....12

3. **स्मरण :** रांगेय राघव : स्मृतियों की विश्रृंखलित छाया - *राजाराम भादू* 17

4. **कविता** : तपोभूमि का प्रारम्भ - *रांगेय राघव* 32

5. **आत्मकथांश** - लियो ट्रॉटस्की - अनु. : *संजना कौल* *38*

6. **लेख** : कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर 50
जयपुर : आदि से अंतिम 'आखर' तक - *जितेन्द्र भाटिया*

7. **तिनका-तिनका** - दो समाजों के बीच - *प्रकाश चंद्रायन* *69*

8. **प्रसंग-अप्रसंग :** एक उपन्यास लिखने के बाद- *अविनाश मिश्र* *74*

9. **कहानी** - ओझल - नैयर मसूद - अनु. : *आयशा आरफ़ीन* *78*

10 **ख़ाका :** सफ़िया अख़्तर - घर का भेदी - अनु. : *बृजेश अम्बर*.....100

11. **आत्मकथ्य :** एक असफल मजदूर नेता और गीतकर का आत्मकथ्य -1
संघर्ष के सुख - *कमल किशोर श्रमिक* *108*

12. **कविता** – कुछ नज़्में - *फ़िदा हुसैन* 118

13. **रपट** – संगमन-24- *विष्णु कुमार शर्मा* 126

काल के कपाल पर लिखा सच

इतिहास का इंजन सच है झूठ नहीं - ट्रॉटस्की

राजनीति अपने पक्ष में इतिहास का हर तरीके से और भरपूर इस्तेमाल करने की कोशिश करती है, इसलिए, कि बावजूद हर तरह से छिपाने की कोशिश के, किसी भी समय की राजनीति और उससे जुड़े व्यक्तियों की सच्चाई इतिहास से छिपी नहीं रहती । वह हर सच बता देता है, बेशक कुछ समय ले लेता हो। इतिहास के पास यह ताकत होती है। इतना ही नहीं, इतिहास जो सच बता जाता है, वही सच काल के कपाल पर लिखा हुआ चमकता रहता है। शाश्वत होता है। इतिहास की यह ताकत राजनीति को परेशान करती है, खासतौर से उस राजनीति को, जो अन्यायी, क्रूर और बर्बर होती है, जो अमानवीय, अरचनात्मक असहिष्णु होती है, जो अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को किसी भी तरह की नैतिकता, सिद्धान्त से परे और ऊपर मानती है । ऐसी राजनीति का सबसे बड़ा हथियार झूठ होता है। इसी के सहारे वह अपने समय में लगातार भ्रम के कुहासे रचती है । इसी के सहारे अपने उद्देश्यों में सफल होती चलती है। वह कभी नहीं चाहती और कभी बर्दाश्त नहीं करती, कि उसके किसी भी झूठ पर कोई शंका करे। उस पर कोई प्रश्न उठाए । इसके बिल्कुल विपरीत, इतिहास का सीधा सरोकार, सवाल उठा कर राजनीति की हर सच्चाई को परखना और दुनिया के सामने बेपर्दा करना होता है। इसके लिए वह कई स्त्रोत इस्तेमाल करता है। कई प्रविधियाँ अपनाता है। यह विपरीत समीकरण इतिहास और राजनीति के बीच एक स्थायी द्वंद्व बनाए रखता है। इसीलिए राजनीति अपने समय में लिखे जा रहे इतिहास को अपने नियन्त्रण में रखना चाहती है। उसे अपने अनुकूल लिखना और प्रस्तुत करना चाहती है। वह अपने झूठ को सच दिखाने के लिए, पुराने इतिहास को भी बदलना या मिटा देना चाहती है । वह चाहती है आने वाली पीढ़ियाँ राष्ट्र, और समाज को